कौशल विकास सामग्री श्रृंखला-22

बंधेज कला

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर (म.प्र.)

कौशल विकास सामग्री शृंखला 22

बंधेज कला

कोड नं.	:	009 (सतत शिक्षा)
लेखिका	:	मीता ओझा
संपादन	:	तारा जायसवाल
फोटोग्राफ	:	गोपाल टेलर
संस्करण	:	प्रथम, अगस्त 2006
प्रतियाँ	:	2000
मूल्य	:	11/-

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : **राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर**
भारतीय ग्रामीण महिला संघ, म.प्र. शाखा
महालक्ष्मी नगर, सेक्टर आर, इन्दौर- 452010
फोन : 2551917, 2574104, फैक्स : 0731-2551573
Email : srcindore@dataone.in
literacy@satyam.net.in

मुद्रक : **कलर ग्राफिक्स, राजेन्द्र नगर, इंदौर**

आमुख

नवसाक्षरों को कौशल विकास के लिए अभिप्रेरित करने एवं मार्गदर्शन प्रदान करने हेतु संसाधन केन्द्र द्वारा विषय विशेषज्ञों के तकनीकी सहयोग से **'बंधेज कला'** पुस्तिका का निर्माण किया गया है। बंधेज करने से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी प्रस्तुत पुस्तिका में दी गई है। **बंधेज कला** का नवसाक्षरों हेतु सरल एवं सुबोध भाषा में लेखन **श्रीमती मीता ओझा** द्वारा किया गया है। पुस्तिका के लिए फोटोग्राफ हेतु **मृगनयनी एम्पोरियम** एवं **रूपमती एम्पोरियम** के अधिकारियों एवं स्टाफ द्वारा प्रशंसनीय सहयोग प्रदान किया गया। संसाधन केन्द्र इनका हार्दिक आभार व्यक्त करता है।

आशा है, इस कौशल विकास सामग्री शृंखला से नवसाक्षरों को उनकी रुचि की कला एवं रोजगार संबंधी आवश्यक जानकारी प्राप्त हो सकेगी।

आपके अनमोल सुझावों का हमेशा स्वागत रहेगा।

कुन्दा सुपेकर
निदेशक
राज्य संसाधन केन्द्र
प्रौढ़ शिक्षा, इन्दौर (म.प्र.)

बंधेज कला

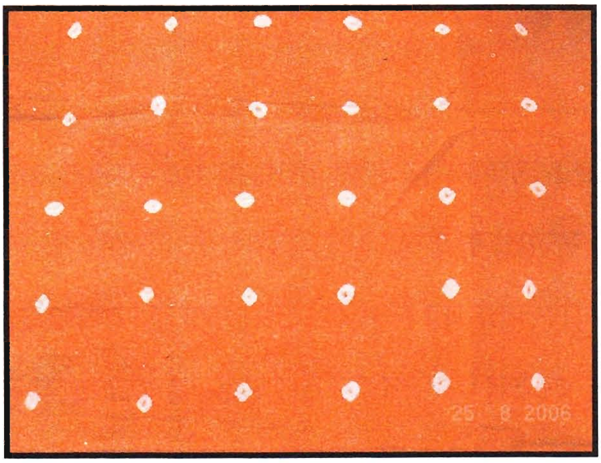

बंधेज का अपना एक महत्व है। इस कला का जन्म स्थान राजस्थान व गुजरात को माना जाता है। बंधेज कपड़े को धागे से बाँधकर रंगने की एक कला है। इसके द्वारा बहुत कम खर्च तथा समय में डिजाइन बनाई जा सकती है।

बंधेज द्वारा कपड़ों पर विभिन्न प्रकार के डिजाइन बनाए जाते हैं। आधुनिक काल में इसका बहुत विकास हुआ है। अनेक युवतियों-महिलाओं में इस कला के प्रति रूझान बढ़ा है। महिलाएँ एवं युवतियाँ इसे घर पर ही सरलता से कपड़ों पर बना सकती हैं।

आधुनिक समय में इस कला का महत्व बढ़ता ही जा रहा है। इस कला में किसी मशीन या औजार की आवश्यकता नहीं होती, न ही अधिक जगह की। सीमित धन से यह व्यवसाय किया जा सकता है तथा आमदनी बढ़ाई जा सकती है।

बंधेज के लिए आवश्यक सामग्री

- कपड़ा
- एक बाल्टी
- बड़ी पतीली
- पुराना अखबार
- एक प्रेस
- दो छोटे टब
- दस्ताने (रबड़ के)
- एक स्टोव या गैस
- एक मेज
- दो चम्मच
- पक्का धागा
- सुई
- कपड़ा धोने वाला सोडा
- कटोरी
- साधारण नमक
- रंग
- रबर बैंड
- एक कैंची
- चाकू
- चिमटियाँ (कपड़े पर लगाने वाली)
- खड़ा अनाज
- पेंसिल
- फिक्सर (रंग पक्का करने के लिए)

कपड़े का चुनाव

बंधेज के लिए हम सूती, लिनन, मलमल, वॉयल, कैम्ब्रिक, सादी पापलीन, सिल्क, रेशमी कपड़ा ले सकते हैं। बंधेज में जो भी

वस्तु बनानी है, उसी के अनुसार कपड़ा लेना चाहिए। बंधेज में हम मोटे कपड़े का भी प्रयोग कर सकते हैं। जितना मोटा कपड़ा होगा उतनी गाँठे कम पड़ेंगी और डिजाइन बड़ा बनेगा।

डिजाइन बनाने के पूर्व तैयारी

कपड़े का प्रयोग करने से पहले कपड़े को अच्छी तरह से धो लेना चाहिए । कपड़े को धोने से कपड़े का स्टार्च निकल जाता है। इससे रंग पक्के व चमकदार चढ़ते हैं। इसके पश्चात् प्रेस कर लें । प्रेस करने से सलवटें दूर हो जाती हैं।

डिजाइन बनाने के पूर्व सभी आवश्यक सामग्रियों को एकत्र कर लेना चाहिए। कपड़े पर जहाँ-जहाँ डिजाइन बनाना है, वहाँ निशान लगा लेना चाहिए।

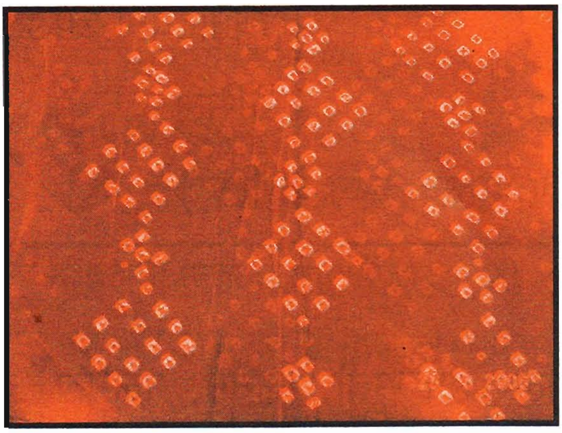

डिजाइन बनाने के तरीके

बंधेज में हम कपड़े को बाँधकर, सिलाई कर, गाँठ लगाकर तथा कपड़े को मोड़कर डिजाइन बना सकते हैं। कपड़ों पर जिस जगह धागा बाँध देते हैं, वहाँ पर कपड़े का मूल रंग ही रह जाता है। अन्य स्थानों पर दूसरा रंग चढ़ जाता है। कपड़े पर डिजाइन निम्नलिखित तरीकों से बनाई जा सकती है।

1. गाँठ लगाकर डिजाइन बनाना

गाँठ द्वारा हम आकर्षक डिजाइन बना सकते हैं, इसमें हमें कपड़े को बाँधना नहीं पड़ेगा। केवल कपड़े पर हाथ से गाँठ लगानी है और फिर कपड़े को रंग लेना है। इस तरह से विभिन्न प्रकार की डिजाइन तैयार हो सकती है।

2. कपड़े को धागे से बाँधकर डिजाइन बनाना

कपड़े को धागे से बाँधकर भी विभिन्न प्रकार के डिज़ाइन बनाए जा सकते हैं। कपड़े पर विभिन्न डिजाइन बनाने के लिए कपड़े को अलग-अलग प्रकार से बाँधा जा सकता है।

गोलाकार डिजाइन बनाना

कपड़े पर गोलाकार डिजाइन बनाने के लिए कपड़े को धागे से गोलाकार बाँधकर गोल आकृति देते हैं। गोलाकार डिजाइन बनाने के लिए कपड़े को बीच में से पकड़कर ऊपर से नीचे की ओर धागे से बाँधते जाते हैं। पूरा बाँधने के बाद उसे रंगा जाता है। जहां धागा बंधा था, वह स्थान रंगने के बाद मूल रंग में रहता है। अन्य जगह पर कलर आ जाता है।

चौरस डिजाइन बनाना

एक चौरस कपड़ा लेकर उसे बीच में से मोड़ लेते हैं, मोड़ने के बाद कपड़े को तिकोन की तरह मोड़ दें। धागे के ऊपर के हिस्से को बाँध दें। इसके बाद कपड़े को रंग दें। कपड़े को सूखने के बाद खोलें। हमें चौरस डिजाइन प्राप्त हो जाएगी।

मोड़कर डिजाइन बनाना

कपड़े को मोड़कर आप विभिन्न प्रकार के डिजाइन बना सकते हैं। इसके द्वारा आप चौरस, लहरिया, धारीदार अनेक प्रकार के डिजाइन बना सकते हैं।

कपड़े को समतल रूप से तिरछे मोड़कर धागे से कसकर बाँध देने से भी आकर्षक डिजाइन प्राप्त हो जाता है।

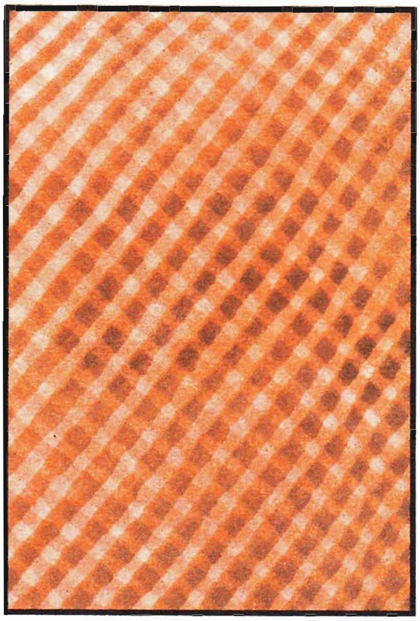

3. अन्य तरीके

एक चौरस कपड़ा लेकर उसे बीच में से मोड़कर दोहरा कर लें। फिर उसे चुन्नट की तरह तह लगा दें। तह किए हुए कपड़े को रबर बैण्ड से कसकर बाँध दें। इससे हमें आकर्षक डिजाइन प्राप्त हो जाएगी। इस तरह धारीदार डिजाइन कपड़े को मोड़कर तथा बाँधकर भी बनाई जा सकती है।

4. सुई–धागे से सिलकर डिजाइन तैयार करना

जिस प्रकार कपड़े को बाँधकर विभिन्न आकर्षक डिजाइन बना सकते हैं, उसी प्रकार कपड़े पर सिलाई करके भी आकर्षक डिजाइन बना सकते हैं। इसके लिए हमें सुई तथा पक्के धागे की आवश्यकता पड़ेगी।

- कपड़े पर सबसे पहले पेंसिल से निशान लगा लें (डिजाइन के अनुसार)।
- डिजाइन पर एक टांका छोटा लेकर पूरे में कच्चा टांका करना है।
- कच्चा टांका करने के बाद उसे खींचकर बांधें।
- कपड़े को रंग लें। इस तरह हमें एक आकर्षक डिजाइन प्राप्त हो जाएगी।

इसी प्रकार हम कपड़े में बीज, कंकर, दालें, खड़े अनाज आदि बांधकर भी डिजाइन बना सकते हैं।

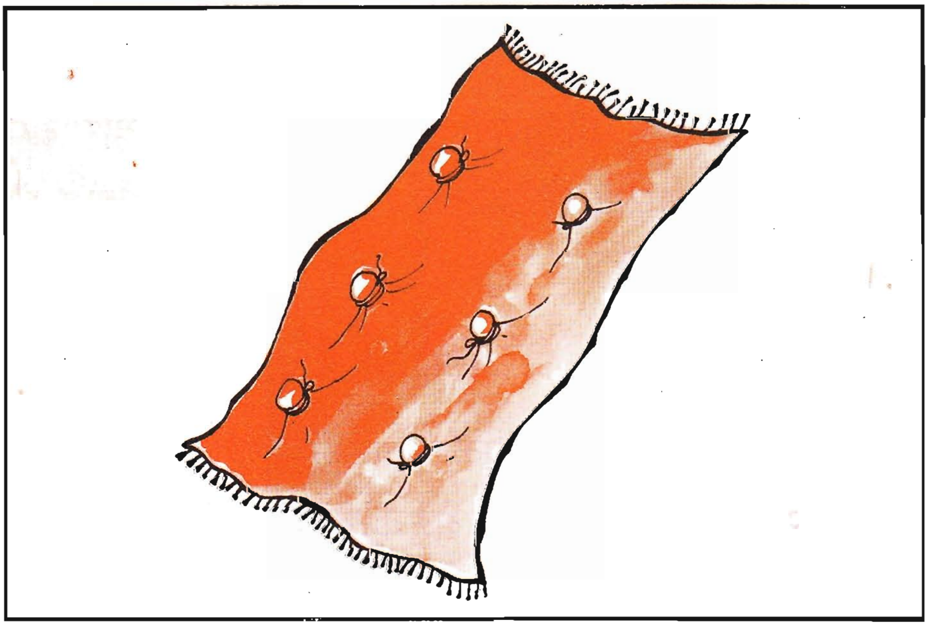

5. रंग संयोजन

बंधेज में कपड़े पर एक रंग नहीं अनेक रंग, रंग सकते हैं। अगर दो-तीन रंगों का प्रयोग कर रहे हैं, तो किस रंग के मेल से कौन-सा रंग बन सकता है यह जानकारी नीचे दी गई है-

उदाहरण के लिए -

लाल	+	पीला	=	नारंगी
पीला	+	नीला	=	हरा
बैंगनी	+	हरा	=	ग्रे
बैंगनी	+	नारंगी	=	भूरा

इस तरह आप स्वयं ही अनेक रंग मिलाकर नये रंग तैयार कर सकते हैं। ऐसा करने से आपको कपड़े पर दो-तीन रंग रंगने से ही छः-सात रंगों का मिश्रण दिखाई दे सकता है। इससे आप कम समय में कम मेहनत से आकर्षक डिजाइन बना सकते हैं।

कपड़ा रंगते समय हमेशा पहले हल्का रंग रंगना चाहिए। फिर गहरा रंग रंगना चाहिए। उदाहरण के लिए कपड़े को यदि पहले पीले कलर में रंगा है, तो उस पर फिर लाल या ब्राउन रंग करना चाहिए।

6. दो या अधिक कलर में डिजाइन बनाने की विधि

- कपड़े पर डिजाइन बाँधने से पूर्व यह ध्यान रखना चाहिए कि जहाँ सफेद या कपड़े का मूल रंग रखना है, वहाँ पर धागा बांधना चाहिए।
- कपड़े को प्रथम रंग में रंगना चाहिए।
- यदि कपड़े को द्वितीय रंग में रंगना है तो धागे को वहीं बाँधना चाहिए जहाँ पर प्रथम कलर रखना हो। उसके बाद कपड़े को दूसरे रंग में रंगना चाहिए।
- यदि तीसरे रंग में रंगना है तो धागा वहीं बाँधेंगे जहाँ पर हमें द्वितीय रंग रखना हो, उसके पश्चात् कपड़े को तीसरे रंग में रंग लेंगे।

उदाहरण के लिए

किसी कपड़े पर यदि तीन रंग करना हो पीला, लाल, काला। ऐसी स्थिति में कपड़े पर डिजाइन बनाकर यह तय कर लें कि कौन-सा रंग कहां लेना है। अब सफेद रंग की डिजाइन को धागे से बाँधेंगे, फिर पीला रंग करेंगे। अब जहाँ पीला रंग चाहिए वहाँ पर धागा बाँधेंगे, फिर लाल रंग करेंगे। जहाँ लाल रहने देना है, वहाँ धागा बाँध दें तथा

काले रंग में रंग दें। सभी रंगों में रंगने व सूखने के बाद कपड़े को खोला जाता है। हमें सफेद कपड़े पर सफेद, पीला, लाल, आरेंज, ब्राउन इन सभी रंगों की छटाएँ दिखेंगी।

रंगों के बारे में जानकारी

बंधेज में अनेक प्रकार के रंगों का प्रयोग किया जाता है। कुछ रासायनिक रंग होते हैं और कुछ साधारण।

ब्रेन्थाल रंग

ब्रेन्थाल रंग रासायनिक रंग है। इन रंगों का ही हम अधिकतर प्रयोग करते हैं। यह रंगों के मेल से बनता है। एक को हम बेस रंग तथा दूसरे को साल्ट रंग कहते हैं।

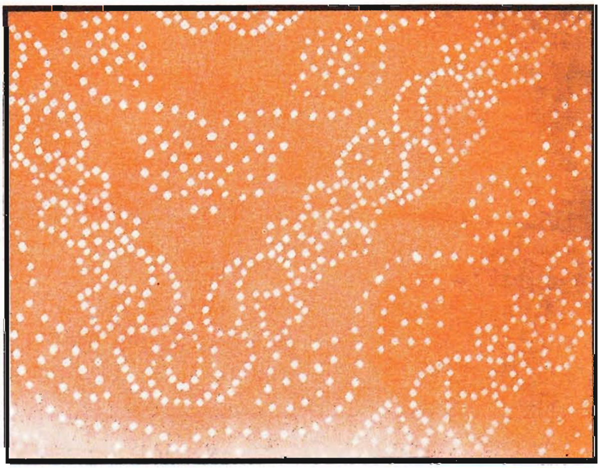

बेस रंग	साल्ट रंग
1. ए.टी.	1. यलो जी.सी. साल्ट
2. ए.एस.	2. ऑरेन्ज जी.सी. साल्ट
3. ए.एन.	3. जी.पी. साल्ट
4. एम.एन.	4. ब्ल्यू. बी. साल्ट
5. बी.एन.	5. स्कारलेट आर.सी. साल्ट
6. एफ.आर.	6. ब्लेक के. साल्ट
7. सी.टी.	7. रेड बी. साल्ट
8. जी.आर.	8. कोर्निथ बी. साल्ट
	9. वायलेट बी. साल्ट

किन रंगों के मेल से कौन-सा रंग बनता है, यह जानना अत्यन्त आवश्यक है। उदाहरण के लिए यहाँ एक मीटर कपड़े में रंग की मात्रा तथा रंगों के मेल के बारे में बतलाया जा रहा है -

1. ब्लेक

ए.एन.	5 ग्राम
ब्लेक के + ब्ल्यू बी. साल्ट	10 + 5 = 15 ग्राम
कास्टिक सोडा	1 चम्मच
टर्की रेड ऑयल	1 चम्मच
साधारण नमक	15 ग्राम

2. नेवी ब्ल्यू

बी.एन. बेस	5 ग्राम
ब्ल्यू.बी. साल्ट	10 ग्राम
कास्टिक सोडा	1 चम्मच
टर्की रेड ऑयल	1 चम्मच
साधारण नमक	10 ग्राम

3. मैजेन्टा

एम.एन. बेस	5 ग्राम
स्कारलेट आर.जी. साल्ट	10 ग्राम
कास्टिक सोडा	1 चम्मच
टर्की रेड ऑयल	1 चम्मच
साधारण नमक	10 ग्राम

4. मैरून

एम.एन. बेस	5 ग्राम
जी.पी. साल्ट	10 ग्राम
कास्टिक सोडा	1 चम्मच
टर्की रेड ऑयल	1 चम्मच
साधारण नमक	10 ग्राम

5. पीला

ए.टी. बेस	5 ग्राम
यलो जी.सी. साल्ट	10 ग्राम
कास्टिक सोडा	1 चम्मच
टर्की रेड ऑयल	1 चम्मच
साधारण नमक	10 ग्राम

6. लाल

एम.एन.	5 ग्राम
स्कारलेट आर.सी. साल्ट	10 ग्राम
कास्टिक सोडा	1 चम्मच
टर्की रेड ऑयल	1 चम्मच
साधारण नमक	10 ग्राम

किस बेस रंग को किस साल्ट से मिलाने से कौन-सा रंग बनता है यह ऊपर बताया गया है। एक मीटर कपड़े को रंगने के लिए यह रंगों की मात्रा है। कपड़े की लम्बाई के अनुसार इसे बढ़ाया जा सकता है।

7. रंग बनाने की विधि तथा कपड़ों को रंगना

बेस रंग-

बेस रंग को हम प्रथम डिप कहते हैं। क्योंकि कपड़े को पहले हम इससे रंगते हैं।

साल्ट रंग-

साल्ट रंग को हम द्वितीय डिप कहते हैं। क्योंकि बेस रंग में कपड़ा रंगने के बाद हम उसी कपड़े को साल्ट रंग में रंगते हैं।

बेस रंग बनाने की विधि

बेस रंग बनाने के लिए एक बाउल (बड़ा कटोरा) में रंग और टर्की रेड ऑयल डालकर अच्छी तरह से पेस्ट बना लीजिए। पेस्ट बनाने के बाद 1 कप गर्म पानी उसमें डाल दें। फिर उसमें कास्टिक सोडा डालकर मिला लें। बेस रंग तैयार हो जाएगा।

साल्ट रंग बनाने की विधि

अब दूसरा बाउल लीजिए। उसमें साल्ट रंग तथा साधारण नमक मिला लीजिए। फिर उसमें आधा कप ठंडा पानी मिला लीजिए। अगर गर्मी अधिक हो तो बर्फ का टुकड़ा मिला सकते हैं। इस तरह साल्ट रंग तैयार हो जाता है।

ब्रेन्थॉल रंगों से कपड़े रंगने की विधि

दो टब लीजिए। दोनों टब में इतना पानी लीजिए जिसमें कपड़ा अच्छी तरह डूब जाए। एक टब के पानी में बेस रंग तथा दूसरे में साल्ट रंग मिला दीजिए। फिर जिस कपड़े को रंगना है उसे सादे पानी में भिगो दें। फिर दस्ताने पहनकर कपड़े को बेस रंग (प्रथम डिप) में डाल दें। उसके बाद कपड़े को साल्ट रंग (द्वितीय डिप) में डाल दें। इस विधि को दो-तीन बार दोहराएं जिससे कि रंग पक्का हो तथा कपड़े पर ठीक प्रकार से आ जाए। फिर कपड़े को छाँह में सुखा लें। इस प्रकार कपड़े को हल्के रंग से गहरे रंग में रंग सकते हैं।

इस तरह आप ब्रेन्थॉल रंग से कपड़े रंग सकते हैं।

साधारण रंगों से कपड़ा रंगने की विधि

बाजार में कपड़ा रंगने के लिए साधारण रंग मिलते हैं। आप उनमें से कोई भी रंग कपड़ा रंगने के काम में ला सकते हैं। ये रंग सस्ते होते हैं। साधारण रंग का प्रयोग करते समय हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि सूती तथा रेशमी कपड़ों के लिए रंग अलग-अलग होते हैं।

एक मीटर कपड़े के लिए 15 से 20 ग्राम रंग ले सकते हैं। उसी मात्रा में नमक तथा कपड़े धोने वाला सोडा ले लें।

रंग बनाने की विधि तथा कपड़ा रंगने की विधि

एक पतीले में पानी लेकर गर्म करें। उसमें रंग, सोडा तथा नमक मिला दें। इस तरह रंग तैयार हो जाता है।

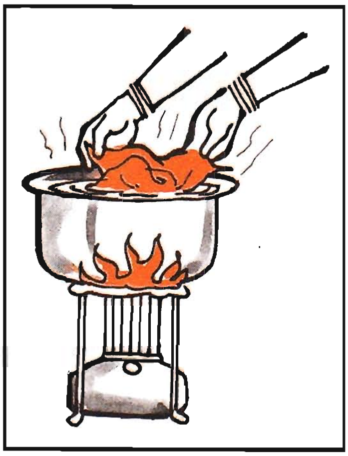

जब पानी अच्छा गर्म हो जाए तो कपड़े को उसमें अच्छी तरह डुबा दें। इस तरह कपड़ा रंग जाता है। फिर उसे डाई फिक्सर में डालकर 10 मिनट के लिए रख दें। इस तरह रंग पक्का हो जाता है। इस रंग से कपड़ा रंगने में किसी भी प्रकार की कठिनाई नहीं होती है।

इस तरह हम कैमिकल्स तथा साधारण रंग दोनों में से किसी भी विधि द्वारा कपड़ा रंग सकते हैं।

यदि हमें दो कलर में रंग करना है, तब हम कपड़े को प्रथम कलर में रंगने के बाद उसे साधारण पानी से धोकर, सुखाकर दूसरे कलर में रंग लेते हैं। लेकिन उसके पहले जहां पर हमें पहला रंग रखना है, वहाँ धागा बाँध देना चाहिए। फिर रंगने के बाद डिजाइन के लिए जो धागे बाँधें गए हैं, उन्हें सुखाकर खोल लेना चाहिए।

कपड़े को रंगने के बाद धागा खोलना

कपड़े पर बंधी डिजाइन से धागे को खोलने से पहले कपड़े को पानी में से निकालकर सुखा लें। ऐसा करने से कपड़े से अतिरिक्त रंग उतर जाएगा। कपड़ा सूखने के बाद आप कैंची से धागे को काट लें। ब्लेड या चाकू का प्रयोग नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे कपड़ा कटने का डर रहता है। थोड़ी सी असावधानी से कपड़ा नष्ट हो सकता है। इसलिए धागों को सावधानीपूर्वक कैंची से काटें। धागे काटने के बाद कपड़े को जोर से न खींचें बल्कि हाथ से धीरे-धीरे धागे को कपड़े से निकालें। जब कपड़े पर से धागे निकल जाएं तब आप कपड़े को फिर से पानी में धोकर सुखा लें। फिर कपड़े को प्रेस कर लें। इस तरह कपड़े पर वास्तविक रंग आ जाएगा और रंग चमक उठेंगे।

मुख्य बातें

- फिक्सर को हमेशा पानी में घोलकर प्रयोग में लेना चाहिए।
- फिक्सर के पानी में कपड़े को 10 मिनट तक डालकर रखना चाहिए ताकि कलर पक्का हो जाए।
- कलर करते समय प्लास्टिक बैग हमेशा साथ रखें। कपड़े के जिस हिस्से को नहीं रंगना है, उसे प्लास्टिक बैग या पॉलिथीन में रख दें और उस बैग को बाँध दें।

8. मुख्य सावधानियाँ

- कपड़ा सफेद या हल्के रंग का लें।
- कपड़ा हमेशा सूती, सिल्क, पापलीन, रूबिया, क्रेम्ब्रिक ही लें।
- धागा पक्का लें तथा कपड़े को बाँधते समय कसकर बाँधें।
- रंगने के पहले कपड़े को धोकर स्टार्च निकालकर प्रेस कर लें ।
- धागा बाँधते समय धागे के बीच में अन्तर न हो।
- यदि गोल डिजाइन बनाना हो तो कपड़े को गोलाई के आकार में बाँधें। चौरस डिजाइन बनाना हो तो चौरस आकार में बाँधें।

- रंगने के लिए कपड़े को पहले से ही तैयार कर के रखें।

रंग करते समय ध्यान रखने योग्य बातें

- रंग करने से पहले रंग की स्कीम तैयार कर लें। हल्के से गहरे रंग का प्रयोग करें।
- कपड़ा रंगने से पहले कपड़े को भिगो लें। हर रंग के बाद कपड़े को सादे पानी में से निकाल लें।
- एक रंग रंगने के बाद दूसरा रंग रंगने से पहले कपड़े को सूख जाने दें।
- रंगने से पहले आप रबर के दस्तानों का प्रयोग करें।
- अलग-अलग रंग के लिए अलग-अलग टब हो।
- रंग का प्रयोग करने के बाद रंगों की पुड़िया कसकर बाँधकर रखें। रंग को हवा से बचाएं।
- रंग निकालने के लिए सूखे चम्मच का प्रयोग करें। अलग-अलग रंग के लिए अलग-अलग मग तथा चम्मच रखें।

बंधेज कला में रोजगार की संभावनाएँ

बंधेज के काम के लिए किसी मशीन या औजार की आवश्यकता नहीं पड़ती है। कम पूंजी में इस व्यवसाय को शुरू किया जा सकता है। इस कला में रोजगार की संभावनाएँ इस प्रकार से हैं-

- व्यावसायिक संस्थानों के लिए सहायक सामग्री का निर्माण किया जा सकता है।
- स्वसहायता समूहों का निर्माण कर व्यावसायिक संस्थान स्थापित किया जा सकता है।
- किसी व्यावसायिक संस्थान , शैक्षणिक संस्थान, प्रशिक्षण संस्थान में नौकरी की जा सकती है।
- घरेलू उद्योग की स्थापना की जा सकती है।

तैयार सामग्री का विक्रय

- **बुटिक –** ये शहर तथा आसपास के कस्बों में चलाए जाते हैं, इनके माध्यम से ये सामग्री बेची जा सकती हैं।
- **व्यावसायिक संस्थान–** शहरों में स्वैच्छिक संगठनों एवं शासन द्वारा संचालित व्यावसायिक प्रतिष्ठान होते हैं। जैसे- हरियाणा

हैण्डलूम, राजस्थान आर्ट, मृगनयनी एम्पोरियम आदि इन स्थानों पर एक निश्चित कमीशन पर माल बेचा जा सकता है।

- **स्थानीय बाजार-** नगरों में छुट्टी के दिन सड़कों पर खुदरा दुकानें लगती हैं। इसके अलावा विभिन्न ग्रामीण अँचलों में भी हाट का एक निश्चित दिन होता है, जहाँ पर निर्मित सामग्री को आसानी से बेचा जा सकता है।

सामग्री की अनुमानित लागत एवं लाभ

एक चादर की लागत		रुपए
एक चादर की कीमत	-	225
डिजाइन बनाने के लिए धागे की कीमत	-	10
रंग की कीमत	-	18
नमक	-	8
डाइ फिक्सर	-	10
कुल	**-**	**271**
विक्रय मूल्य	-	325
लाभ	-	55 रुपये

एक साड़ी की लागत		रुपए
साड़ी की कीमत	-	200
धागे की कीमत	-	10
रंग की कीमत	-	18
नमक की कीमत	-	8
डाई फिक्सर	-	10
कुल	**-**	**246**
विक्रय मूल्य	-	300 से 325
लाभ	-	60 रुपये

प्रशिक्षण

इस काम का प्रशिक्षण लेने के बाद इसे कोई भी व्यक्ति कर सकता है विशेषकर युवतियाँ और महिलाएँ। इस कार्य का प्रशिक्षण जनशिक्षण संस्थान, फैशन डिजाइनिंग संस्थान तथा इस काम में लगे कुशल कारीगरों से भी लिया जा सकता है। प्रशिक्षण लेने के बाद ही इसे व्यवसाय के रूप में शुरू करें ताकि आप कुशलतापूर्वक कार्य कर सकें।

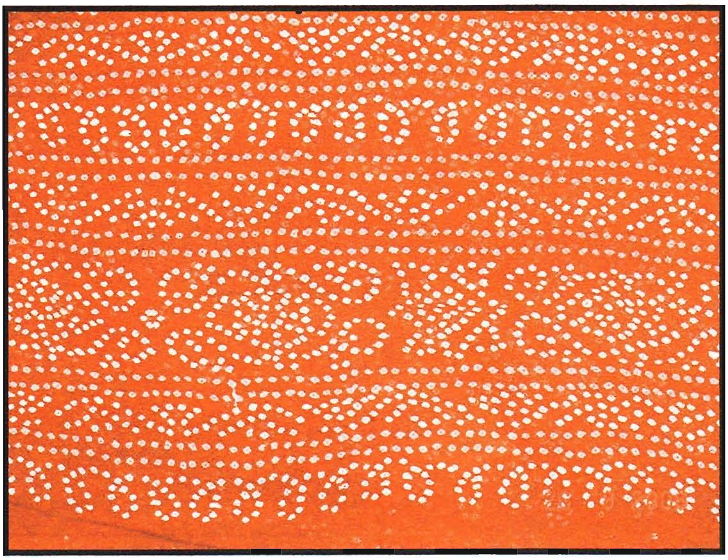

कौशल विकास संबंधी हमारे प्रकाशन

• **मुर्गी पालन**	10.00
• **सब्जियों की खेती**	14.00
• **ब्लॉक प्रिंटिंग**	9.00
• **हुनर** (रज़ाई-गद्दे बनाने के व्यवसाय से संबंधित)	7.50
• **उजाले की ओर** (अनुसूचित जाति-जनजाति से संबंधित योजनाएं)	7.50
• **विकास की ओर** (विकास की विभिन्न योजनाएं)	13.00
• **आओ सिलाई सीखें** (वस्त्रों की कटाई एवं सिलाई)	7.00
• **घरेलू उपकरणों का रखरखाव**	8.50
• **पारिवारिक बजट** (बजट बनाना)	8.50
• **नर्सरी**	12.00
• **मशरूम की खेती**	7.50
• **जैविक खेती**	7.50
• **नई डगर** (लांड्री एवं हेअर कटिंग)	7.50
• **घरेलू व्यवसाय** (साड़ी व्यवसाय)	9.00
• **डेयरी**	8.00
• **फलों की खेती भाग - 1**	14.00
• **फलों की खेती भाग-2**	14.00
• **फलों एवं सब्जियों का संरक्षण भाग-1**	13.00
• **फलों एवं सब्जियों का संरक्षण भाग-2**	13.00
• **मेहन्दी** - हुनर एवं रोजगार	10.00
• **कढ़ाई** - हुनर एवं रोजगार	11.00
• **बटिक कला**	12.00

प्रकाशक : राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा
भारतीय ग्रामीण महिला संघ, इन्दौर (म.प्र.)
महालक्ष्मी नगर, सेक्टर 'आर', इन्दौर (म.प्र.)-452010,
फोन : 2551917, 2574104 फैक्स : 0731-2551573
e-mail : srcindore@dataone.in • literacy@satyam.net.in